ईश्वर को जानों

ओ३म्

लेखक
भवदेव शास्त्री

ईश्वर की वाणी

ईश्वर को जानो

लेखक
भवदेव शास्त्री

प्रकाशक
आर्य समाज मन्दिर गाँधी चौक, नसीराबाद
जिला - अजमेर

प्रथम संस्करण - सितम्बर 2017
प्रतियाँ - 1000
मूल्य -
मुद्रक - अग्रवाल ऑफसेट
कायस्थ मौहल्ला,
पुरानी मण्डी, अजमेर

लेखक का पता - भवदेव शास्त्री
ग्राम पोस्ट - टांटोटी,
अजमेर - 305627
मो. 9001434484

भूमिका

इस संसार में जो भी व्यक्ति आत्म कल्याण, आत्मिक उन्नति करना चाहता है वह सत्संग व स्वाध्याय का आश्रय लेता है, वह किसी विद्वान साधु सन्यासी का सत्संग प्राप्त करता है। और आत्म कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है।

दुर्भाग्यवश यदि व्यक्ति को योग्य विद्वान या गुरु न मिले तो वह अन्धविश्वास या अन्ध श्रद्धा का शिकार हो जाता है। देखा जाय तो आज सम्पूर्ण मानव जाति हमें अन्धविश्वास से ग्रस्त दिखायी पड़ती है, ईश्वर, जीव, पुनर्जन्म, देवता, मोक्ष, स्वर्ग, नरक, आदि विषयों का सही ज्ञान न होने के कारण व्यक्ति अज्ञान अन्धकार में भटक रहा है। सच्चा ज्ञान वही है जो हमें वैज्ञानिक दृष्टि प्रदान करे, जिससे हम विवेकी बन कर सही व गलत का निर्णय कर सके। जब हमारे सामने दो मार्ग आते है, तो उस समय बुद्धिमान व्यक्ति सही मार्ग का चयन करता है।

सृष्टिक के आदि में परमपिता परमात्मा ने हमें वेद का ज्ञान प्रदान किया। जिससे सम्पूर्ण मानव जाति अपने कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य, ज्ञान-अज्ञान, को ठीक प्रकार समझ कर इस संसार में प्रेम, सौहार्द, भाईचारे की भावना से रहते हुए, भौतिक व आत्मिक उन्नति करते हुए मोक्ष तक पहुँच सके, लेकिन आज वेद की शिक्षा के अभाव में मानव भटक गया है, ईश्वर जो आत्मा का विषय था आज ईश्वर एक व्यापार का, विवाद का, लड़ाई-झगड़े का, वैमनस्यता, कटुता का विषय बन गया है।

जिस ईश्वर को प्राप्त करके हमें आत्म कल्याण करना चाहिए था, आज उसी ईश्वर के नाम पर हम एक दूसरे का खून बहा रहे है। ईश्वर के नाम पर अनेक मत पंथ सम्प्रदाय खड़े हो चुके है और नित नये खड़े हो रहे है, आश्चर्य का विषय है कि प्रत्येक सम्प्रदाय को मानने वाला यही कहता है कि मेरा ईश्वर ही सच्चा है शेष सभी झूठे हैं।

इस लघु पुस्तिका में गुरु शिष्य संवाद के रूप में सरल भाषा में, वेद के अनुसार, सभी प्रकार के पाठकों की बौद्धिक क्षमता को ध्यान में रखते हुए ईश्वर के सच्चे स्वरुप को समझाने का प्रयास किया गया है, केवल एक घण्टे के स्वाध्याय से ही आप ईश्वर का सच्चा स्वरुप समझ पायेंगे। वैसे तो ईश्वर का विषय बहुत गम्भीर व विस्तृत है, हम अल्पज्ञ जीव ईश्वर की महिमा को एक जन्म में तो नहीं समझ पायेंगे, लेकिन समझने का प्रयास व पुरुषार्थ अवश्य कर सकते है। याद रखे ईश्वर के सही स्वरुप को जाने बिना, हम ईश्वर से ज्ञान नहीं बढ़ा पायेंगे। और सारा जीवन अन्धे के पीछे चलते रहने के समान व्यर्थ ही जायेगा। इस पुस्तिका को ध्यान से, गम्भीरता

पुर्वक, हठ, दुराग्रह को छोड़कर, अपने मत सम्प्रदाय के चश्में को उतारकर पढ़ेगें तो निश्चित रुप से आपको लाभ होगा, सच्चा ज्ञान प्राप्त होगा, अज्ञान का पर्दा हटेगा, जीवन में भटकाव समाप्त होगा और आत्म कल्याण का मार्ग खुल जायेगा

इस पुस्तिका के प्रकाशन में स्कूल तिलोनियां के श्री दीपक कुमार सेन व श्री श्रीलालजी चौधरी का सम्पूर्ण सहयोग रहा। आप दोनो शिक्षा के प्रति समर्पित, सेवाभावी, उत्साही व आर्य (श्रेष्ट) विचारों वाले युवा है।

मै आपके सहयोग के लिए हृदय से आभार प्रकट करता हूँ व आप दोनो के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

भवदेव शास्त्री

एक बार एक शिक्षित नौजवान समुद्र देखने गया, वहां उसने देखा कि अनेक लोग समुद्र में तैर रहे है कुछ किनारे पर खेल रहे है व कुछ नाव में बैठकर समुद्र का आनन्द ले रहे है। उसके मन में आया कि अरे! तू भी पहली बार यहां आया है तो क्यो न नाव की यात्रा की जाये। उसने एक नाविक से यात्रा के विषय में बात की, सौदा तय होकर यात्रा प्रारम्भ हुई। यात्रा के दौरान शिक्षित नौजवान और नाविक में बातचीत प्रारम्भ हुई।

नौजवान ने नाविक से पुछा – क्या आपने गणित, भूगोल, विज्ञान आदि विषयों को पढ़ा है? नाविक ने उत्तर दिया – भाई साहब! मैं अनपढ़ हूँ। बचपन में मेरे पिता जी का देहांत हो गया जिसके कारण परिवार की समस्त जिम्मेदारी मेरें ऊपर आ गई इसलिए में विद्यालय नहीं जा सका। नौजवान ने कहा – भाई यदि तुमने भूगोल, गणित, आदि नहीं सीखा तो तुम्हारी पच्चीस प्रतिशत जिन्दगी बेकार हो गई, अच्छा यह बताओं – तुम क्रिकेट के विषय में क्या जानते हो? नाविक बोला – भाईसाहब! मैं दिन भर नाव चलाकर अपना भरण पोषण करता हूँ, मुझे क्रिकेट खेलने का समय नहीं मिलता, इसलिए में क्रिकेट के बारें में कुछ नहीं जानता। नौजवान बोला – भाई यदि तुमने क्रिकेट नहीं सीखा तो तुम्हारी पच्चीस प्रतिशत जिन्दगी और बेकार हो गई, अच्छा यह बताओं तुम फिल्मों के बारे में क्या जानते हो? नाविक बोला – अरे बाबू जी मैं दिन भर मेहनत मजदूरी करता हूँ, मुझे फिल्म देखने का समय ही नहीं मिलता है, इसलिए मैं फिल्मों के विषय में भी कुछ नहीं जानता। नौजवान ने कहा– फिर तो तेरी पच्चीस प्रतिशत जिन्दगी और बेकार हो गई, यानी कुल पिच्चतर प्रतिशत।

इतने में नाविक ने देखा कि तेज हवाऐं चलने लग गई और समुद्र में लहरें ऊंची उठने लगी। नाविक घबराकर बोला – बाबू जी! हम बात करते करते बहुत दूर अन्दर तक आ गये है, समुद्री तुफान आने वाला है, हमें वापस किनारे की ओर चलना चाहिए।

यह कहकर नाविक ने तेजी से नाव चलाना प्रारम्भ किया लेकिन लहरों से ठकराने से नाव लडखडानें लगी। नाविक बोला – बाबू जी मै नाव को नहीं बचा पाऊंगा, इसलिए हमें नाव से कुदकर तैरते हुऐ किनारें की तरफ चलना पडेगा। नाविक नें पूछा – बाबू जी क्या आपकों तैरना आता है।

शिक्षित नौजवान घबराते हुए बोला – अरे भाई मुझे बचाओं, मै तैरना नहीं

जानता। नाविक पानी में छलांग लगाते हुए बोला- बाबू जी मेरी तो पच्चीस प्रतिशत जिंदगी बची रही, लेकिन आपकी तो सौ प्रतिशत डूबेगी क्यों कि आपने सब कुछ सीखा लेकिन तैरना नहीं सीखा।

यदि हमने भी संसार में आकर सब कुछ जाना लेकिन ईश्वर को नहीं जाना तो निश्चित ही हमारा हश्र भी उस शिक्षित नौजवान के समान होगा। इसलिए प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह ईश्वर के सही स्वरुप को जाने।

आज अज्ञानता व अन्धविश्वास के कारण ईश्वर एक विवाद व लड़ाई झगड़े का विषय बन गया है, हर सम्प्रदाय का व्यक्ति अपने ईश्वर को ही सर्वश्रेष्ठ मान रहा है। ये सब ऐसे ही हो रहा है, जैसे कि दृष्टान्त है- एक स्थान पर पांच अन्धे रहते थे, उन्होने विचार किया कि हम देख तो नहीं सकते लेकिन हाथी कैसा होता है यह हम हाथ के स्पर्श से जरुर समझ सकते है। संयोग से एक दिन उनके नगर में एक हाथी आ गया।

लोगो ने उन पांचो को हाथी के पास ले जाकर खड़ा कर दिया, एक को सुण्ड के पास, दुसरे को पैर के पास, तीसरे को कान के पास, चौथे को कमर के पास, पांचवे को पूंछ के पास सभी अन्धों ने हाथों के स्पर्श से जान लिया कि हाथी कैसा होता है। सभी घर पर आये, और आपस में चर्चा करने लगे। एक अन्धा बोला भाई हाथी तो बड़ विचित्र प्राणी है अरे वह तो पाइप के जैसे लगता है। दुसरा बोला नहीं नहीं वह तो खम्भे के जैसे लगता है, तीसरे ने कहा शायद तुम दोनो ने सही अनुभव नहीं किया अरे वह तो पर्दे के समान लगता है, चौथा बोला तुम तीनों बड़ें ही मुर्ख हो अरे वह तो दीवार के समान लगता हैं। इस पर पाँचवें को ओर क्रोध आया उसने कहा लगता है तुम चारो आंख से ही नही , दिमाग से भी अन्धे हो, अरे वह तो झाड़ू के जैसा लगता है। इस प्रकार पांचों आपस में झगड़ा करने लगे, और एक दुसरे को अज्ञानी मानने लगे।

आज सारा संसार अन्धों की तरह ईश्वर के सही स्वरुप को न समझने के कारण आपस मे लड रहे है , हर मत पंथ सम्प्रदाय का व्यक्ति अपने ही ईश्वर को सच्चा साबित करने मे लगा हुआ है, कोई ईश्वर को कैलाश पर्वत पर मान रहा है, कोई काशी, मथुरा, वृन्दावन, पुष्कर, सातवे आसमान, व कोई चौथे आसमान पर ढूंढ रहा है। पूरी दुनियाँ ईश्वर को देखने के लिए इधर उधर भाग रही है लेकिन ये दौड कही रुकती हुई दिखाई नही देती। ईश्वर के नाम पर कही निरीह पशुओ को मारा जा रहा

है कही शराब, भांग का सेवन किया जा रहा है, कोई सारे काम छोड़ कर पैदल यात्रा कर रहा है, आज कौनसा कुकर्म है जो ईश्वर के नाम पर नहीं हो रहा है, उपरोक्त सारी समस्यायें ईश्वर के सही स्वरुप को न समझने के कारण पैदा हुई है और आगे भी होती रहेगी।

जो व्यक्ति ईश्वर को ठीक प्रकार जान लेगा और उसी रुप में मान लेगा, वह कभी मत पंथ सम्प्रदाय की उलझन में नहीं उलझेगा, उसका मन शान्त रहेगा, उसका आचरण, आहार पवित्र होगा, वह पाप से दूर रहेगा, उसकी बुद्धि का विकास होगा, दुर्गुण दुर्व्यसन से दूर रहते हुए वह अपने जीवन को सुखी व समृद्ध बना पायेगा, धर्म अर्थ काम मोक्ष की प्राप्ति करेगा, उसके जीवन में दया, प्रेम, अहिंसा, त्याग, सेवा, पवित्रता आदि गुण सहज रुप से विघमान रहेंगे, वह किसी भी प्रकार से अज्ञान अंधविश्वास, अंधश्रद्धा में नहीं फसेगा, वह ज्ञानी व धर्मात्मा बन पूर्व पुरुषार्थ कर आत्म कल्याण के मार्ग पर चलेगा, ईश्वर भक्त को संसार के समस्त ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी, सुख दुःख में सदा सहज व शान्त होगा, उसका शरीर स्वस्थ मन पवित्र बुद्धि विकसित व आत्मा बलवान होगी, तो आईये हम भी ईश्वर को जानकर अपने जीवन का कल्याण करें।

एक आश्रम में गुरु और शिष्य रहते थे एक बार शिष्य के मन में ईश्वर को जानने की जिज्ञासा हुई। वह गुरु के समीप गया और गुरु को प्रणाम करके कहा गुरुदेव, मैं ईश्वर को जानना चाहता हूँ कि आखिर ईश्वर क्या है, कैसा है?

गुरु ने कहा - देखो पुत्र, ईश्वर को जानना सरल नहीं है आज अधिकांश लोग धन प्राप्ति का, यश प्राप्ति का, पद प्राप्ति का, उपाय जानना चाहते है और एक तुम हो जो ईश्वर को जानना चाहते हो।

शिष्य - गुरुदेव, मैने सुना है कि ईश्वर प्राप्ति से ही सच्चा सुख व शान्ति मिलती है, अत: आप मुझे ईश्वर के विषय में बताने की कृपा करे।

गुरु - मुझे बहुत प्रसन्नता है कि तुम ईश्वर को जानना चाहते हो, तो ध्यान से सुनो- जब हम किसी से प्रथम बार मिलते है तो पहले उससे परिचय करते है और परिचय में तीन प्रश्न पुछते है पहला प्रश्न - आपका नाम क्या है? दूसरा प्रश्न-आप क्या करते है? तीसरा प्रश्न - आप कहां रहते है? इन तीनो प्रश्नो के उत्तर से हम सम्बंधित व्यक्ति के विषय में जानकारी प्राप्त कर लेते है। तो यही प्रश्न हम ईश्वर से करते है कि हे! ईश्वर आपका नाम क्या है? आप कहा रहते हो व आप क्या करते हो।

शिष्य - गुरु जी! क्या ईश्वर बोलता है जो अपना परिचय देगा?

गुरु - हां पुत्र! ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद ये चारो वेद ईश्वर की वाणी है, जिनके माध्यम से हमें सम्पूर्ण ज्ञान दिया गया है !वेद वैज्ञानिक ग्रन्थ है प्राचीनतम ग्रन्थ है, वेद की शिक्षा सम्पूर्ण मानव जाति के लिए है आज से तीन हजार वर्ष पूर्व हम सभी संसार वासी वेद को ही धर्म ग्रन्थ मानते थे वेद उस समय से है जब हिन्दू मुस्लिम सिक्ख, ईसाई, जैन, बौद्ध, फारसी, यहूदी, कम्यूनिस्ट आदि कोई भी वर्ग इस संसार में नहीं था, उस समय संसार में केवल मानव जाति ही थी।

शिष्य - तो गुरु जी! वेद में ईश्वर ने अपना परिचय कैसे दिया है ईश्वर ने अपना क्या नाम बताया है?

गुरु - पुत्र! यजुर्वेद में बताया गया है "ओ३म् क्रतो समर" अर्थात् हे कर्मशील जीव तू मुझे ओ३म् नाम से स्मरण कर "ओ३म् एवं ब्रह्म" ओ३म् प्रतिष्ठ आदि स्थानों पर ईश्वर का नाम ओ३म् ही सिद्ध होता है।

शिष्य - गुरु जी ! यदि कोई वेद को ना माने तो क्या कोई और भी प्रमाण है?

गुरु - हां पुत्र! सभी आर्ष ग्रन्थ वेदानुकुल होते है उपनिषद में लिखा है " ओमित्येकाक्षरमुदगीथमुपासीत्" अर्थात् ईश्वर की ओ३म् नाम से उपासना करो।

शिष्य - यदि कोई उपनिषद् को भी न माने तो ?

गुरू - योग दर्शन में लिखा है "तस्य वाचक प्रणव" अर्थात् उस ईश्वर का नाम ओ३म् है।

शिष्य - क्या श्रीमद्भगवत गीता में भी इस विषय में लिखा है?

गुरु - क्यो नहीं, श्रीकृष्ण तो स्वयं योगी थे, प्रतिदिन सन्धया उपासना करते थे। गीता में लिखा है "ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म" ओ३म् तत् सत् निर्देश अर्थात् ब्रह्म को ओ३म् नाम से स्मरण करो। विद्वान लोग ईश्वरको ओ३म् नाम से पुकारते है।

शिष्य - इस विषय में क्या और भी प्रमाण है?

गुरु - हमारे सभी आर्ष ग्रन्थ, ऋषि मुनि, विद्वान, एक मत से स्वीकार करते है कि ईश्वर का मुख्य नाम ओ३म् है गुरुनानक ने भी कहा "एक ओंकार सत नाम" इस प्रकार हमें ज्ञान होता है कि ईश्वर का मुख्य नाम ओ३म् है।

शिष्य - गुरुदेव ! यदि ईश्वर का मुख्य नाम ओ३म् है तो फिर ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश, शिव, रुद्र, सरस्वती, लक्ष्मी आदि ये नाम किसके है?

गुरु - ये सभी नाम ईश्वर के है, ईश्वर में अनेक गुण है इसलिए उसके अनेक नाम है लेकिन मुख्य नाम तो 'ओ३म्' ही है। जैसे सबसे बड़ा है तो ब्रह्मा, सब जगह होने से विष्णु, दिव्य गुणो से युक्त है तो देव, वह ज्ञान देता है तो सरस्वती सब ऐश्वर्यो का स्वामी है इसलिए लक्ष्मी आदि।

शिष्य - क्या ईश्वर के इतने नाम हो सकते है? एक व्यक्ति का एक ही नाम होता है।

गुरु - क्या तुम्हारे अनेक नाम नहीं है?

शिष्य - नहीं गुरु जी, मेरा तो केवल एक ही नाम है।

गुरु - जब तुम माँ से मिलते हो तो वह तुम्हे किस नाम से पुकारती है।

शिष्य - मेरी माँ मुझे बेटा कह कर पुकारती है।

गुरु - तुम्हारा पुत्र तुम्हे क्या कहेगा?

शिष्य - वह मुझे पिताजी कहेगा।

गुरुजी - तुम्हारे शिष्य किस नाम से सम्बोधित करेंगे।

शिष्य - वे मुझे गुरुजी कहेंगे।

गुरु - तो पता चलता है कि हम सबका एक नाम मुख्य होता है, लेकिन सम्बन्ध के कारण हम पिता-पुत्र, काका, मामा, भांजा, दादा, नाना आदि बन जाते है। व्यवसाय के कारण वकील, डॉक्टर, अध्यापक, सेठजी बन जाते है, गुणों के कारण दानी, धर्मात्मा, परोपकारी, विद्वान आदि बन जाते है। इस प्रकार पता चलता है कि ईश्वर का मुख्य नाम " ओ३म्" है, लेकिन गुणो के कारण उसके अनेक नाम है।

शिष्य - लेकिन कोई उसे गॉड, खुदा, पिता, अल्लाह आदि कहता है? ये सब क्या है?

गुरु - ये सभी अलग अलग भाषा में उसी ईश्वर के लिए है? एक ही वस्तु के लिए प्रत्येक भाषा में अलग-अलग शब्द होते है, जैसे पिता को पापा, डैडी, फादर, अब्बा, पानी को वॉटर, जल, वारी, माता को मम्मी, माँ, अम्मी आदि। केवल भाषा के कारण ऐसा लगता है, भाव एक ही है। एक पिता के तीन पुत्र है और वे इसी बात पर झगड़ा करते है कि मेरा पिता अच्छा है, मेरा अब्बा अच्छा है या मेरा डैडी फादर अच्छा है तो हम उन पुत्रों का अज्ञानी या नासमझ ही कहेंगे।

शिष्य - धन्यवाद गुरुजी। आपने मुझे ईश्वर के नाम का परिचय कराया। अब दुसरा प्रश्न है कि ईश्वर कहां रहता है? क्योंकि कोई उसे हरिद्वार, पुष्कर, मथुरा, कैलाश पर कोई सातवें और कोई चौथे आसमान पर मान रहा है।

गुरु - हे मेरे प्रिय शिष्य! मुझे प्रसन्नता है कि तुम्हे ईश्वर के सच्चे स्वरुप को जानने की उत्सुकता है, तो सुनो वेद में लिखा है "सपर्यगात्" गीता में लिखा "सर्वमावृत्य तिष्ठति" अर्थात् ईश्वर सब जगह है, सर्वव्यापक है ऐसा कोई स्थान नहीं जहां ईश्वर न हो। जैसे दूध के कण कण में घी व्यापक है, जैसे पत्थर के कण कण में आग है, तिल के कण कण में तेल है, वैसे ही संसार के कण कण में ईश्वर व्यापक है।

कयोंकि ईश्वर सर्वव्यापक, सच्चिदानन्द स्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान,

सर्वज्ञ, अजन्मा, न्यायकारी आदि गुणों से युक्त चेतन सत्ता है।

शिष्य - क्या ईश्वर एक जगह नहीं रहता?

गुरु - पुत्र! तुम ही बताओं कि ईश्वर कौनसी एक जगह रहता है? यदि ईश्वर एक जगह है तो आज तक दिखाई क्यो नहीं दिया? यदि एक जगह होता तो उसका शरीर भी होता, जिसका शरीर होता उसके माता-पिता भी होते है। शरीर होता तो वह खाता-पिता, घूमता, देखता, चलता यानि जो कार्य शरीरधारी प्राणी करते हैं वे सभी कार्य ईश्वर भी करता, फिर नियम भी है कि जो शरीरधारी है उसकी मृत्यु भी होती है, जो चीजे बनती है वह टूटती है, ईश्वर को एक जगह मानकर चलेंगें तो अनेक प्रश्न पैदा होंगे। इसलिए ईश्वर सर्वव्यापक है।

शिष्य - अच्छा गुरु जी! यदि ईश्वर है तो वह हमें आंखो से दिखाई देना चाहिए, क्यो जो वस्तु होती है वह दिखाई देती है।

गुरु - पुत्र क्या तुम प्रत्येक पदार्थ को आँखो से देख सकते हो?

शिष्य - हां गुरु जी, क्यो नहीं जो होगा वह तो जरुर दिखेगा।

गुरु - देखो पुत्र! संसार में अनेक पदार्थ ऐसे है जो होते तो है लेकिन हम उन्हें देख नहीं सकते। अच्छा यह बताओ क्या तुम्हे हवा दिखाई देती है? क्या तुम्हे गुरुत्वाकर्षण बल दिखाई देता है? क्या बिजली के तारो में करंट दिखाई देता है? क्या तुम्हे फल सब्जी के प्रोटीन, विटामिन, वसा, कार्बोहाइड्रेड दिखाई देते है? क्या हमें आत्मा दिखाई देती है? क्या हमें परमाणु दिखाई देता है, क्या इलेक्ट्रोन, न्यूट्रोन, प्रोटोन दिखाई देते है। क्या सर्दी, गर्मी, भूख, प्यास, दर्द, खुशी आदि दिखाई देती है, जड़ी बूटियों, औषधियों में जो शक्ति होती है क्या वह दिखाई देती है? इस प्रकार संसार में अनेक पदार्थ है जो होते हुए भी हमें दिखाई नहीं देते। हम उन्हें दुसरे माध्यमों से अनुभव करते है, इसी प्रकार ईश्वर आँखों से दिखाई नहीं देता, उसे आत्मा से अनुभव किया जाता है।

शिष्य - यदि हम ईश्वर को सब जगह मानेंगे तो गड़बड़ हो जायेगी।

गुरु - क्या गड़बड़ होगी?

शिष्य - यदि ईश्वर सब जगह है, तो फिर वह मल - मूत्र या गन्दे प्राणियों में भी

होगा?

गुरु – हा अवश्य ! क्यो नहीं होगा, वह तो सर्वव्यापक जो है।

शिष्य – तो गुरु जी इस तरह तो ईश्वर भी गन्दा हो जायेगा अपवित्र हो जायेगा।

गुरु – अरे मेरे भोले शिष्य ! मै तुम्हे समझा रहा हूँ कि ईश्वर निराकार है, गन्दा तो वो होगा जिसका आकार होगा। अच्छा यह बताओं पृथ्वी पर मल मूत्र करने से गुरुत्वाकर्षण बल गन्दा होता है क्या? बिजलीके तार पर गन्दगी लगने से करंट गंदा होता है क्या? आत्मा शरीर में रहती है जहां मल मूत्र खून चर्बी मांस आदि है तो क्या आत्मा गंदी हो जाती है? सूर्य की किरणे गन्दगी पर पड़ने से क्या गन्दी हो जाती है। इस प्रकार ईश्वर निराकार होने से सदा पवित्र ही रहता है।

शिष्य – अच्छा गुरु जी ! ईश्वर की सत्ता का ज्ञान कैसे होता है?

गुरु – संसार की रचना को देखकर ईश्वर की सत्ता का ज्ञान होता है, बिना कर्त्ता के किसी चीज का निर्माण नही होता। प्रकृति जड़ है इसमें चेतनता नहीं है, ज्ञान नहीं है, प्रकृति स्वयं अपना निर्माण नहीं कर सकती जैसे अपने आप मटका नहीं बन जाता है, इसके लिए मिट्टी व कुम्हार की आवश्यकता है, इसी प्रकार ईश्वर इस संसार का रचयिता, नियामक व्यवस्थापक है। इस प्रकार प्रथम तो हम संसार की रचना को देखकर रचनाकार का ज्ञान करते है। दूसरा एकान्त में पाप करने में हमें भय, शंका, लज्जा को अनुभव होता है ये भी ईश्वर की सत्ता का अनुभव कराते है। तीसरा संसार के सभी ऋषि, विद्वान, वैज्ञानिक आदि ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करते है। चौथा – अत्यन्त कष्ट में प्रत्येक व्यक्ति किसी अदृश्य शक्ति रुप ईश्वर का स्मरण करता है। पाँचवा – मनुष्य स्वयं कर्मो का फल प्राप्त नहीं कर सकता, ईश्वर ही हमारे अच्छे बुरे कर्मो का फल देता है। छठा – प्रत्येक पदार्थ का कोई न कोई स्वामी होता है, ब्रह्माण्ड में ग्रह नक्षत्रों का स्वामी एक ईश्वर ही है। सातवा – जिस प्रकार नदियाँ समुद्र की ओर आकर्षित होती है, उसी प्रकार जीव ईश्वर की ओर आकर्षित होता है, आँठवा छोटी वस्तु बड़ी वस्तु का सहारा लेती है जैसे मनुष्य जहाज का , जहाज समुद्र का, समुद्र पृथ्वी का,

पृथ्वी सूर्य का, सूर्य ईश्वर का। इस प्रकार हम ईश्वर की सत्ता का ज्ञान प्राप्त करते है।
अब हम आते है तीसरे प्रश्न पर

शिष्य - गुरु जी! तीसरा प्रश्न क्या था?

गुरु - पुत्र! तीसरा प्रश्न था की "ईश्वर क्या करता है?"

शिष्य - तो गुरु जी बताईये ईश्वर क्या करता है? मैने तो सुना है कि ईश्वर सब कुछ कर सकता है। इसलिए कोई परीक्षा उत्तीर्ण होने के लिए, कोई सन्तान, धन नौकरी आदि प्राप्त करने के लिए मन्नते करते हुए दिखायी देते है, इससे यह पता चलता है कि ईश्वर सब कुछ कर सकता है।

गुरु - भाई, तुमने ईश्वर को क्या समझ रखा है क्या वह हमारा गुलाम है कि जो भी हम कहेंगे तो वह हमारे सारे काम कर देगा?

शिष्य - गुरु जी हमने तो सुना है कि संसार में जो कुछ हो रहा है, वह ईश्वर की इच्छा से हो रहा है।

गुरु - अरे नहीं भाई! यही तो संसार में भ्रम फैला हुआ है कि जो होगा ईश्वर इच्छा से होगा। हमें कुछ करने की आवश्यकता नहीं है।

शिष्य - तो गुरु जी फिर बताईयें कि आखिर ईश्वर करता क्या है?

गुरु जी - तो ध्यान से सुनो! ईश्वर के चार कार्य है पहला - सृष्टि को बनाना, दूसरा सृष्टि को चलाना, तीसरा सृष्टि का संहार करना और चौथा सभी जीवों को अच्छे बुरे कर्मो का फल देना।

शिष्य - हाहाहा (हंसता हुआ) गुरु जी यहां तो आप फँस गये।

गुरु - कैसे?

शिष्य - आपने कहा कि ईश्वर सृष्टि को बनाता है, लेकिन देखने में तो लगता है कि यह सृष्टि अपने आप (ऑटोमैटिक) चल रही है। इसमे ईश्वर की कोई भूमिका नहीं दिखाई देती।

गुरु - अच्छा यह बताओं - सृष्टि जड़ है या चेतन?

शिष्य - सृष्टि तो जड़ है।

गुरु - जड़ किसे कहते है?

शिष्य - जिसमें जीव नहीं हो, जो कोई कार्य नहीं कर सके, जिसमें कोई ज्ञान,

शक्ति, सामर्थ्य नहीं हो उसे जड़ कहेंगे।

गुरु - जब सृष्टि जड़ है तो ऑटोमैटिक कैसे बन गई?

शिष्य - हां गुरु जी! ये बात तो है, फिर बताईयें सृष्टि को किसने बनाया है?

गुरु - तीन पदार्थ अनादि है एक ईश्वर, दूसरा जीव, तीसरी प्रकृति, इनमें से प्रकृति जड़ है ईश्वर और जीव ही चेतन है।

शिष्य - चेतन किसे कहते है?

गुरु - जिसमें ज्ञान, शक्ति, सामर्थ्य और जीवन हो।

शिष्य - तो गुरुजी फिर क्यो न जीवन को ही चेतन होने के कारण सृष्टि रचयिता मान लिया जाये।

गुरु - जीव का सामर्थ्य सीमित है, जीव एक देशी, अल्पज्ञ है। क्या जीव सूर्य चन्द्रमा आदि ग्रह नक्षत्रों का निर्माण कर सकता है? क्या जीव गर्भ में किसी शरीर का निर्माण कर सकता है? इन दो उदाहरणों से ही पता चलता है कि जीव सृष्टि का निर्माण नहीं कर सकता है।

अब बचा केवल "ईश्वर"।

ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरुप, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ आदि गुणों से युक्त होने के कारण सृष्टि रचना में समर्थ है।

इस विषय में तुम्हे एक सुन्दर दृष्टांत सुनाता हूँ।

शिष्य - हां गुरु जी सुनाइये, बड़ा अच्छा लग रहा है।

गुरु - एक बार एक व्यक्ति प्रातः भगवान का ध्यान करके उठा तो उसके कॉलेज में पढ़ने वाले पुत्र ने पुछा - पिताजी! यह आप प्रतिदिन आँख बन्द करके क्यो बैठते हो? पिताजी ने कहा- पुत्र मैं प्रतिदिन परमात्मा का ध्यान करता हूँ, इससे आत्मिक शान्ति मिलती है, प्रत्येक व्यक्ति को ईश्वर का धन्यवाद अवश्य करना चाहिए।

इतना सुनते ही लड़के ने हँसते हुए कहां - पिताजी! आप किस जमाने में जी रहें हो? ये सब पुरानी बाते है, सब ढकोसला है। पिता ने कहा - नहीं पुत्र, ईश्वर के हमारे ऊपर अनन्त उपकार है, हमें इतना सुन्दर संसार बनाकर दिया। पुत्र बोला - पिताजी आप भी कैसी बातें कर रहे है, ये संसार तो अपने आप बन रहा है, इसे चलाने वाला कोई नहीं है। ऐसा कहकर पुत्र

कॉलेज चला गया। पीछे से पिता ने पुत्र के कमरे की दिवार पर एक फूल का चित्र बना दिया। शाम को पुत्र वापस आया, फूल के चित्र को देखा तो माता से पुछा माँ मेरे कमरे में फुल का चित्र किसने बनाया?

माँ ने कहा – पुत्र ! मुझे इसका ज्ञान नहीं है, शायद तुम्हारे पिताजी ने बनाया होगा, उनसे ही पुछो। लडके ने पिताजी से पुछा पिता ने कहा – पुत्र यह चित्र तो ऑटोमैटिक ही बन गया लगता है। हवा से ढककन खुल गया होगा और फिर अगले हवा के छोंकेसे चित्र बन गया होगा।

पुत्र ने कहा पिताजी क्या मैं बच्चा हूँ जो आप मुझे बहकाने में लगे है अरे में कॉलेज में पढ़ता हूँ और जानता हूँ कि कोई भी चीज अपने आप नहीं बन सकती, बिना कर्त्ता के कोई कार्य नहीं होता, जो चीज बनी हुई है उसका बनाने वाला कोई न कोई अवश्य होता है, यह फुल का चित्र अपने आप नहीं बना, किसी ने बनाया है। पिता ने कहा तुमने ठीक कहा कि बिना बनाये कोई चीज नहीं बनती है तो बताओं कि ये सुर्य चन्द्रमा पृथ्वी, ग्रह, नक्षत्र आदि किसने बनायें? जब संसार के पदार्थ टेबल, कुर्सी, पेन, कॉपी, मकान, आदि सभी को बनाना पड़ता है, इसी प्रकार इस संसार को भी बनाना पढ़ता है, अपने आप नहीं बनता है संसार के भौतिक पदार्थो का निर्माण मनुष्य करता है और संसार का निर्माण ईश्वर करता है। पुत्र को बात समझ में आ गई।

शिष्य – वाह गुरु जी ! आपने तो कहानी के माध्यम से ही समझा दिया कि ईश्वर के अतिरिक्त सृष्टि रचयिता कोई नहीं है लेकिन यह समझाईये कि ईश्वर कितने है?

गुरु – पुत्र ! ईश्वर एक ही है।

शिष्य – लेकिन देखने में तो आता है कि ईश्वर अनेक है, प्रत्येक व्यक्ति अलगअलग मूर्ति बना कर ईश्वर की पूजा कर रहा है

अलग अलग तीर्थ स्थान, अलग अलग मन्दिर बने हुए है और आप कह रहे है कि ईश्वर एक ही है।

गुरु – पुत्र ! यह विषय थोड़ा गम्भीरता से समझना पड़ेगा, क्यो कि तुम बचपन से ही इन मूर्तियों को, इन चित्रों को ईश्वर मानते आप हो। अब तक तुमने इन मुर्तियों की पूजा की है, इनके नाम की माला फेरी है, उपवास किये है तीर्थ

यात्राऐं की है, अब यदि ईश्वर का सही स्वरुप तुम्हारे सामने है तो विश्वास नहीं होता कि ये सभी ईश्वर नहीं है कई लोग तो यह भी समझ नहीं पाते और उल्टा हम पर आरोप लगा देते है कि हम नास्तिक है इसलिए तुम सावधानी पुर्वक ईश्वर के स्वरुप को समझने का प्रयास करे।

शिष्य – हां गुरुजी ! मैं तैयार हूँ, आप मेरी अज्ञानता को दूर करने का प्रयास कीजिए, मै आपकी बात हठ, दुराग्रह व अहंकार को छोडकर सुनुंगा व कोई शंका होगी तो प्रश्न करुंगा।

गुरु – हां पुत्र ! तुम्हारे मन में कोई भी शंका नहीं रहनी चाहिए, तुम कई वर्षो से अज्ञान अन्धकार में भटक रहे हो आज तुम्हे ज्ञान रूपी मोती चुनने का अवसर मिला है निश्चित रुप से तुम्हारा अज्ञान दूर होगा।

शिष्य – हां गुरु जी समझाइऐ कि जिन्हे हम ईश्वर मानते आये है, आखिर वे सब कौन है?

गुरु – जैसा कि मैने तुम्हे समझाया कि ईश्वर सर्वव्यापक, निराकार, सर्व शक्तिमान, सर्वज्ञ आदि गुणो वाला है, अब ये सारे गुण उन मूर्तियों पर पराकर देखों , ईश्वरीय गुणों की तुलना मुर्ति से करके देखो तब पता चलेगा कि सच्चा ईश्वर कौन है।

शिष्य – कैसे गुरु जी।

गुरु – क्या मूर्ति सर्वव्यापक है?

शिष्य – नहीं । वह तो एक जगह है।

गुरु – क्या मूर्ति निराकार है।

शिष्य – नहीं । उसका तो आकार होता है?

गुरु – क्या मूर्ति सर्वशक्तिमान है?

शिष्य – नही मूर्ति का निर्माण तो मनुष्य करता है, उसमें किसी प्रकार की शक्ति नहीं है।

गुरु – क्या मूर्ति सर्वज्ञ है? क्या मूर्ति चेतन है? क्या मूर्ति सृष्टि का निर्माण कर सकती है? क्या मूर्ति किसी की रक्षा कर सकती है?

शिष्य – गुरु जी, इनमें से एक भी गुण मुर्ति में नहीं है।

गुरु – पुत्र जरा सोचो जब ईश्वर का एक भी गुण मूर्ति में नहीं है तो वह ईश्वर कैसे हो सकती है।

शिष्य - फिर लोग इन महा पुरुषों की मूर्ति बनाकर क्यों पुजते है?

गुरु - ईश्वर के सच्चे स्वरुप को न समझने के कारण अज्ञानता वश लोग इन महापुरुषों को ही ईश्वर मान लेते है फिर इनके मन्दिर बनाना इनके नाम पर भण्डारें करना, इनके आगे प्रार्थना करना आदि प्रारम्भ कर देते है।

शिष्य - गुरुजी फिर हमें क्या करना चाहिए हमारा इन महापुरुषों के प्रति कैसा व्यवहार होना चाहिए।

गुरु - सभी महापुरुष हमारे लिए आदरणीय होते है हमें इनके जीवन चरित्रों का अध्ययन करना चाहिए व जैसा उच्च आदर्शमय जीवन जीकर इन्होने महानता प्राप्त की हमें भी इनके बताये मार्ग पर चलना चाहिए। इनके गुणों को धारण करना ही इनकी सच्ची पूजा है तुम केवल इतना ध्यान रखों की जो संसार की रचना करता है, संहार करता है, संसार को चला रहा है, वही ईश्वर है शेष नहीं।

शिष्य - गुरु जी आपकी बातो से लगता है कि कोई भी मूर्ति ईश्वर नहीं है क्योकि ईश्वर निराकार है मूर्ति साकार है ईश्वर सब जगह है, मूर्ति एक जगह है ईश्वर संसार की रचना करता है मूर्ति को इंसान बनाता है ईश्वर हमारा रक्षक है और हमें मूर्ति की रक्षा करनी पड़ती है, ईश्वर चेतन है मूर्ति जड़ है, इस प्रकार ईश्वर का एक भी गुण मूर्ति के साथ नहीं मिल रहा है।

गुरु - हां पुत्र ! तुमने सही समझा है।

शिष्य - कई लोग ईश्वर को सगुण साकार व निर्गूण निराकार मानते है।

गुरु - सगुण का अर्थ होता है गुण सहित, परमात्मा में दया, न्यायकारिता, पवित्रता, आदि गुण है इसलिए ईश्वर सगुण है और जन्म मृत्यु आदि गुण नहीं है इसलिए तो निर्गुण है, गुण रहित है।

शिष्य - कई मत सम्प्रदाय वाले गुरु को ही ईश्वर मानते है क्या ये ठीक है?

गुरु - ईश्वर गुरुओ का भी गुरु है क्यो कि ईश्वर ने सर्वप्रथम हमें वेद का ज्ञान दिया।

अब रही संसारी गुरुओं की बात तो मैनें तुम्हे बताया कि ईश्वर संसार की रचना करता है क्या कोई संसारी गुरु किसी ग्रह नक्षत्र का निर्माण कर सकता है, क्या किसी गुरु ने आज तक गर्भ में किसी शरीर की रचना की है? एक बात याद रखों मनुष्य चाहे तो ऋषि, मुनि, सन्त, महापुरुष बन

सकता है लेकिन ईश्वर नहीं बन सकता। जो अपने आप को ईश्वर घोषित करवाते है या जो किसी इन्सानी गुरु को ईश्वर मानते है वे दोनो ही अज्ञानी है।

शिष्य – गुरु जी क्या ईश्वर को पाने के लिए कही जाने की आवश्यकता है?

गुरु – तुम ईश्वर को पाने के लिए कहां जाना चाहते हो? अरे भाई जरा समझो, जब ईश्वर सब जगह है और वह तुम्हारे अन्दर भी है। गीता में श्री कृष्ण कहते है "ईश्वर सर्वभूतानां हृद्देश, अर्जुन: तिष्ठति" अर्थात् ईश्वर सभी प्राणियों के हृदय में वास करता है। तो बताओ जब वह हमारे सबसे पास में है तो उसे बाहर ढूंढ़ना क्या समझदारी है?

शिष्य – हम निराकार ईश्वर की पूजा कैसे करे?

गुरु – ईश्वर की पूजा, उपासना का माध्यम है "योग"।
यम नियम का पालन करते हुए, आचरण को शुद्ध बनाना, आहार-विचार को पवित्र रखना, प्रतिदिन प्रात: सायं एकान्त शुद्ध स्थान पर आसन लगाकर बैठे, प्राणायाम करे, ओ३म् व गायत्री मंत्र का अर्थ सहित जप करें। या संन्ध्या के मन्त्रों को अर्थ सहित पाठ करे। साधक को ईश्वर की आज्ञा (वेद) का पालन करना, ईश्वर के प्रति अनन्य प्रेम रखना, स्वाध्याय व निष्काम कर्म द्वारा व आत्मिक उन्नति करनी चाहिए। हमारे सभी वेद, दर्शन उपनिषद् आदि शास्त्रों में ईश्वर प्राप्ति का उपाय योग को ही बताया है।

शिष्य – गुरु जी! आपने जो ध्यान व योग की विधि बताई ये तो विद्वान व्यक्ति ही कर सकता है। कम पढ़ा लिखा व्यक्ति ईश्वर का ध्यान कैसे करेगा?

गुरु – पुत्र! ईश्वर का ध्यान तो सभी कर सकते है। देखों प्रत्येक व्यक्ति धनवान व विद्वान नहीं बन सकता लेकिन धर्मात्मा व ईश्वर भक्त बन सकता है। जीवन को पवित्र बनाना व ईश्वर के नाम का जप करना, ये तो सरल विधि है सभी कर सकते है।

शिष्य – ईश्वर की भक्ति करने से हमें क्या लाभ होगा?

गुरु – ईश्वर भक्ति करने से हमें निम्न लाभ होंगे।

1) भक्ति करने से मन शान्त व प्रसन्न रहता है।

2) आत्मिक उन्नति होती है, आत्मा निर्मल होती है।

3) पाप वासना समाप्त होती है।

4) सत्य, प्रेम, दया, करुणा, सेवा, संयम आदि गुण दृढ़ होते है।

5) आत्मिक बल बढ़ने से दुखों को सहन करने की शक्ति बढ़ती है।

6) तनाव मिटता है।

7) ज्ञान की प्राप्ति होती है।

8) ईश्वर की भक्ति करने से ईश्वरीय गुण, दयालुता, न्यायकारिता, पवित्रता, निर्विकार आदि प्राप्त होते है।

9)ईश्वर के उपकारों का स्मरण करने से, धन्यवाद देने से, कृतघ्नता आदि पाप से बचेंगे।

10) सकल ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।

इत्यादि लाभ होते है, ये मैनें संक्षिप्त से तुम्हे बताया है।

शिष्य - गुरु जी ! कुछ लोग ईश्वर को नहीं मानते है, इसका क्या कारण है?

गुरु - ईश्वर को नहीं मानने के मुख्य रुप से निम्न कारण है-

1) ईश्वर के वास्तिवक स्वरुप को न समझना।

2) परिवार में ईश्वर भक्ति का वातावरण न होना।

3) ईश्वर की आवश्यकता को अनुभव न करना।

4) ऋषि कृत ग्रंथों का स्वाध्याय न करना।

5) किसी प्रिय व्यक्ति की मृत्यु होना।

6) पापियों को सुखी व धर्मात्मा को दुखी देखना।

7) सृष्टि व्यवस्था में दोष देखना।

8) दुर्गुण, दुर्व्यसनों में फंसे रहना।

9) प्रार्थना करने पर भी कामना पूर्ण न होना।

10) अज्ञान, अंधविश्वास व आलस्य के कारण।

उपरोक्त कारण है जिससे लोग ईश्वर को नहीं मानते है।

शिष्य - ईश्वर ने संसार क्यो बनाया?

गुरु - सभी जीवों को सुख देने व मोक्ष प्राप्ति के लिए संसार बनाया है।

शिष्य - गुरुजी। हमारे जीवन में दुख क्यो आते है।

गुरु - बुरे कर्म करने, कुसंग, दुर्गण, दुर्व्यसन व अज्ञानता के कारण हमारे जीवन में दुख आते है।

शिष्य - गुरु जी मेरे मन में और भी प्रश्न है?

गुरु – प्रिय पुत्र! मैने तुम्हे जितना बताया है, उसको अपने जीवन में धारण करो। ईश्वर के सच्चे स्वरुप को जानकर अपना कल्याण करों। शेष प्रश्न फिर कभी पुछना।

शिष्य ने गुरुजी को प्रणाम किया और अपने घर चला गया आज वो बड़ा खुश था कि उसे ईश्वर को जानने का सौभाग्य मिला।